

देहली 9

किनारे के परे।

बचपन में हम मानते हैं कि संसार वहीं ख़त्म होता है जहाँ हमारी नज़र ख़त्म होती है।

गाँव के परे की पहाड़ी।

मुहल्ले के परे की सड़क।

समुद्र के परे का क्षितिज।

हम सोचते हैं कि सीमा उसी से मेल खाती है जिसे हम जानते हैं।

फिर हम बड़े होते हैं।

और हम पाते हैं कि सबसे महत्वपूर्ण किनारे भौगोलिक नहीं होते।

वे आंतरिक होते हैं।

कई वर्षों तक मैंने अपने जीवन की कल्पना पहुँच के भीतर भू-भागों के समूह के रूप में की।

एक काम।

एक पद।

एक लक्ष्य।

एक परियोजना।

हर बार जब मैं किसी मंज़िल तक पहुँचता, एक और प्रकट हो जाती।

हर बार जब मैं कोई सीमा पार करता, एक नई पाता।

शुरू में यह उत्साहजनक था।

यह प्रगति का एक रूप लगता था।

फिर मैं कुछ देखने लगा ।

मुझे मंज़िलें नहीं बदलती थीं ।

बदलते थे वे संक्रमण ।

वह क्षण जब मैं जानी-पहचानी ज़मीन छोड़ता और किसी ऐसी चीज़ में पैर रखता जिस पर मेरा नियंत्रण न रहता ।

महत्वपूर्ण चीज़ें वहीं घटती थीं ।

सदा वहीं ।

कभी सुरक्षा में नहीं ।

सदा किनारे पर ।

किनारा एक विशेष स्थान है ।

वह अतीत का नहीं है ।

वह भविष्य का नहीं है ।

यह एक महीन रेखा है जहाँ निश्चितताएँ खत्म होती हैं और संभावनाएँ शुरू होती हैं ।

इसीलिए यह डर पैदा करता है ।

और इसीलिए यह अनमोल है ।

मैंने अपने जीवन में कई किनारे पार किए ।

कुछ पेशेवर ।

कुछ निजी ।

कुछ जो मुझे छोड़कर किसी को अदृश्य थे ।

वह दिन जब मैंने एक सुरक्षा छोड़ी ।

वह दिन जब मैंने एक बड़ी ज़िम्मेदारी स्वीकार की ।

वह दिन जब एक बीमारी ने समय का अर्थ बदल दिया ।

वह दिन जब एक हानि ने प्रेम का अर्थ बदल दिया ।

हर बार तंत्र वही था ।

पहले डर ।

फिर संदेह ।

फिर क्रदम ।

अंत में खोज ।

वर्षों बीतने के साथ मैंने सीखा कि लगभग सभी महत्वपूर्ण चीज़ें
किनारे के परे जीती हैं ।

प्रेम नियंत्रण के किनारे के परे जीता है ।

विश्वास डर के किनारे के परे जीता है ।

विकास आदत के किनारे के परे जीता है ।

स्वतंत्रता सुरक्षा के किनारे के परे जीती है ।

और अर्थ अहं के किनारे के परे जीता है ।

इसका अर्थ यह नहीं कि किनारा आरामदेह हो ।

वह कभी नहीं होता ।

कोई भी किसी आंतरिक सीमा को कुछ चुकाए बिना सचमुच
पार नहीं करता ।

मान्यताएँ पीछे छोड़नी पड़ती हैं ।

आदतें ।

पहचानें ।

खुद के पुराने पड़ चुके रूप ।

हर रूपांतरण एक वियोग माँगता है ।

और हर वियोग एक तरह की पीड़ा पैदा करता है ।

इसीलिए बहुत से लोग रुके रहना पसंद करते हैं।
इसलिए नहीं कि वे कमज़ोर हों।
इसलिए कि वे क्रीमत समझते हैं।
समस्या यह है कि रुके रहने की भी एक क्रीमत होती है।
कम दिखने वाली एक क्रीमत।
पर वास्तविक।
चूकी हुई संभावना की क्रीमत।
न जिए गए जीवन की।
बिना उत्तर के प्रश्न की।
कभी-कभी मैंने खुद से पूछा कि क्या होता अगर मैंने अधिक
बार सावधानी चुनी होती।
शायद मैंने कम भूलें की होतीं।
मैंने कम कष्ट सहा होता।
मैंने कम जोखिम उठाए होते।
पर मैं एक अलग इंसान बन गया होता।
शायद अधिक सुरक्षित।
निश्चय ही कम संपूर्ण।
क्योंकि हर बार जब हम कोई किनारा पार करते हैं, यथार्थ का
एक हिस्सा आखिरकार हमें दिखाया जाता है।
पहले नहीं।
बाद में नहीं।
केवल पार करने के दौरान।

यही कारण है कि कोई किताब किसी अनुभव की जगह नहीं ले सकती।

कोई सलाह किसी चुनाव की जगह नहीं ले सकती।

कोई सिद्धांत किसी जिए हुए जीवन की जगह नहीं ले सकता।

हम तैयारी कर सकते हैं।

हम अध्ययन कर सकते हैं।

हम सुन सकते हैं।

पर पार करना सदा हमारे ही ज़िम्मे होता है।

और यह एक एकाकी पार-यात्रा है।

लोग तुम्हें किनारे तक साथ ले जा सकते हैं।

वे तुम्हें प्रोत्साहित कर सकते हैं।

वे तुम्हारा साथ दे सकते हैं।

वे तुमसे प्रेम कर सकते हैं।

पर अंतिम क़दम सदा उसी का होता है जो उसे उठाता है।

समय के साथ मैं किनारे को बाधा नहीं बल्कि एक निमंत्रण के रूप में देखने लगा।

उससे बाहर निकलने का निमंत्रण जिसे मैं पहले से जानता था।

खुद को उससे परिभाषित करना बंद करने का जो मैंने किया था।

उसके लिए जगह छोड़ने का जो मैं अभी भी बन सकता था।

इस चेतना ने भविष्य के साथ मेरे संबंध को बदल दिया।

मैंने उसे एक मंज़िल मानना बंद कर दिया।

मैं उसे खोज का एक भू-भाग मानने लगा।

मुझे उसे नियंत्रित नहीं करना था।

मुझे उसे पार करना था ।

यह एक विशाल अंतर है ।

क्योंकि नियंत्रण तनाव पैदा करता है ।

खोज जिज्ञासा पैदा करती है ।

और जिज्ञासा साहस के सबसे सुंदर रूपों में से एक है ।

आज पीछे देखते हुए, मुझे सारे परिणाम याद नहीं ।

मुझे सारे आँकड़े याद नहीं ।

मुझे सारी विजयें याद नहीं ।

बल्कि मुझे किनारे याद हैं ।

वे क्षण जिनमें मैं पीछे लौट सकता था और नहीं लौटा ।

वे क्षण जिनमें मैं दरवाज़ा बंद कर सकता था और मैंने उसे खोला ।

वे क्षण जिनमें मैं सुरक्षा चुन सकता था और मैंने संभावना चुनी ।

हर बार अच्छा नहीं हुआ ।

कुछ बार मैंने गलती की ।

कुछ बार मैंने ऊँची कीमत चुकाई ।

पर हर बार मैंने कुछ ऐसा सीखा जो स्थिर रहकर मैं नहीं सीख सकता था ।

और यही मायने रखता है ।

जीवन के अंत में हम केवल उससे परिभाषित नहीं होते जो हमने रचा ।

हम उन सीमाओं से भी परिभाषित होते हैं जिन्हें पार करने का साहस हमने किया ।

क्योंकि हर मनुष्य के पास एक किनारा होता है।

एक अदृश्य रेखा जिसके परे उसके अपने अगले रूप का आरंभ होता है।

अधिकांश लोग उसे दूर से देखते हैं।

कुछ पास आते हैं।

थोड़े ही उसे पार करते हैं।

मैं नहीं जानता कि मैं साहसी था या नहीं।

मैं केवल इतना जानता हूँ कि हर बार जब जीवन ने मुझे किसी किनारे के सामने खड़ा किया, मैंने पीछे न हटने की कोशिश की।

क्योंकि वहीं संसार अधिक बड़ा हो जाता है।

वहीं मनुष्य अधिक सच्चा हो जाता है।

वहीं कथा जारी रहती है।

किनारे के परे।